मलिक मोहम्मद जायसी : जीवन परिचय और रचनाएँ

प्रो. पुष्पा महाराज
हिन्दी विभाग
सेमेस्टर 2(MJC)

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के मध्यकाल में भक्ति आंदोलन के अंतर्गत सूफी काव्यधारा का महत्वपूर्ण स्थान है। इस धारा के प्रमुख कवियों में मलिक मोहम्मद जायसी का नाम अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। वे प्रेममार्गी सूफी कवि थे, जिन्होंने अपने काव्य के माध्यम से ईश्वर-प्रेम, आत्मा-परमात्मा के मिलन तथा मानवीय प्रेम की आध्यात्मिक व्याख्या प्रस्तुत की। उनकी सर्वप्रसिद्ध रचना **'पद्मावत'** हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है। जायसी ने प्रेम को साधना का माध्यम माना और उसे रूपक एवं प्रतीकों के द्वारा अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया।

जीवन **परिचय**

1. जन्म एवं प्रारम्भिक जीवन

मलिक मोहम्मद जायसी का जन्म लगभग 1492 ई. (कुछ विद्वानों के अनुसार 1477 ई.) में उत्तर प्रदेश के रायबरेली जनपद के **जायस** नामक स्थान पर हुआ था। इसी कारण उनके नाम के साथ 'जायसी' उपनाम जुड़ा। उनके पिता का नाम मलिक शेख ममरेज (या ममरेजुद्दीन) बताया जाता है। वे एक साधारण परिवार से थे और कृषि कार्य से जुड़े थे।

जायसी का जीवन सामान्य किन्तु आध्यात्मिक प्रवृत्ति से युक्त था। वे बचपन से ही चिंतनशील और धार्मिक स्वभाव के थे। ऐसा माना जाता है कि चेचक के कारण उनका चेहरा विकृत हो गया था और एक आँख की दृष्टि भी चली गई थी। स्वयं उन्होंने 'पद्मावत' में अपने शारीरिक दोषों का उल्लेख किया है।

2. शिक्षा एवं आध्यात्मिक झुकाव

जायसी ने प्रारम्भिक शिक्षा स्थानीय स्तर पर प्राप्त की। उन्हें अरबी-फारसी का ज्ञान था, साथ ही लोकभाषा अवधी में भी वे दक्ष थे। वे सूफी संतों की संगति में रहे और आध्यात्मिक साधना की ओर प्रवृत्त हुए।

उनके गुरु के रूप में **सैयद अशरफ जहाँगीर सिमनानी** का नाम लिया जाता है। जायसी सूफी मत के प्रेममार्गी साधक थे। उनके काव्य में सूफी सिद्धांतों—जैसे प्रेम, त्याग, आत्मसमर्पण और ईश्वर की प्राप्ति—का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है।

3. व्यक्तित्व

जायसी अत्यंत विनम्र, सहृदय और उदार प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। वे सांसारिक वैभव से दूर रहकर आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करते थे। उनका जीवन साधना और काव्य-रचना में बीता।

वे हिन्दू-मुस्लिम एकता के पक्षधर थे। उनके काव्य में धार्मिक सहिष्णुता और मानवीय एकता का संदेश मिलता है। उन्होंने प्रेम को सबसे बड़ा धर्म माना।

4. निधन

मलिक मोहम्मद जायसी का निधन लगभग 1542 ई. के आसपास माना जाता है। उनका जीवनकाल राजनीतिक अस्थिरता का समय था, किंतु उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से शांति और प्रेम का संदेश दिया।

साहित्यिक **परिचय**

1. काव्यधारा में स्थान

जायसी हिन्दी साहित्य के **भक्तिकाल** के अंतर्गत आने वाली **सूफी प्रेममार्गी शाखा** के प्रमुख कवि हैं। इस धारा के अन्य कवियों में मंझन, कुतुबन, उस्मान आदि का नाम आता है, किन्तु जायसी को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है।

उनकी रचनाएँ मुख्यतः रूपकात्मक (आलंकृतिक) शैली में हैं, जिनमें सांसारिक प्रेम के माध्यम से आध्यात्मिक प्रेम की अभिव्यक्ति की गई है।

2. भाषा और शैली

जायसी ने अपनी रचनाओं की भाषा **अवधी** रखी, जो उस समय की लोकभाषा थी। उनकी भाषा सरल, सरस और भावपूर्ण है।

उनकी शैली की प्रमुख विशेषताएँ—

- रूपक और प्रतीकात्मकता
- अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग
- दोहा-चौपाई छंद का प्रयोग
- भावों की गहराई और मार्मिकता

प्रमुख **रचनाएँ**

मलिक मोहम्मद जायसी की निम्नलिखित रचनाएँ प्रसिद्ध हैं—

1. **पद्मावत**

2. अखरावट
3. आखिरी कलाम
4. कहरनामा
5. चित्ररेखा

इनमें 'पद्मावत' उनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण कृति है....

1. पद्मावत

(क) रचना-काल

'पद्मावत' की रचना 1540 ई. के लगभग मानी जाती है। यह अवधी भाषा में लिखी गई एक महान प्रेमाख्यान काव्य है।

(ख) कथावस्तु

'पद्मावत' की कथा चित्तौड़ के राजा रत्नसेन और सिंहलद्वीप की राजकुमारी पद्मावती के प्रेम पर आधारित है। रत्नसेन पद्मावती के सौंदर्य की चर्चा सुनकर सिंहलद्वीप जाते हैं और कठिन परीक्षाओं के बाद उनका विवाह पद्मावती से होता है।

चित्तौड़ लौटने के बाद अलाउद्दीन खिलजी पद्मावती के सौंदर्य की चर्चा सुनकर उसे प्राप्त करने के लिए चित्तौड़ पर आक्रमण करता है। अंततः पद्मावती जौहर कर लेती है।

(ग) रूपकात्मक अर्थ

'पद्मावत' केवल ऐतिहासिक प्रेमकथा नहीं है, बल्कि एक रूपक है—

- **रत्नसेन** = साधक (आत्मा)
- **पद्मावती** = परमात्मा (ईश्वर)
- **चित्तौड़** = शरीर
- **अलाउद्दीन** = माया या अहंकार

इस प्रकार जायसी ने सांसारिक कथा के माध्यम से आत्मा-परमात्मा के मिलन का आध्यात्मिक संदेश दिया है।

(घ) साहित्यिक महत्त्व

- यह हिन्दी का उत्कृष्ट प्रेमाख्यान काव्य है।
- इसमें प्रेम की आध्यात्मिक व्याख्या की गई है।
- भाषा, शैली और भाव की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है।

2. अखरावट

यह रचना सूफी सिद्धांतों पर आधारित है। इसमें अक्षरों के माध्यम से आध्यात्मिक ज्ञान की चर्चा की गई है। इसमें ईश्वर-भक्ति और आत्मचिंतन का संदेश मिलता है।

3. आखिरी कलाम

इसमें कयामत (प्रलय) और अंतिम समय का वर्णन किया गया है। यह धार्मिक और दार्शनिक विचारों से युक्त कृति है।

4. कहरनामा

'कहरनामा' में जीवन की नश्वरता और संसार के दुखों का वर्णन है। इसमें वैराग्य और आध्यात्मिक चेतना की भावना प्रमुख है।

5. चित्ररेखा

यह भी एक प्रेमाख्यान काव्य है, जिसमें प्रेम और साधना का समन्वय दिखाई देता है।

जायसी के काव्य में प्रेम को सर्वोपरि स्थान प्राप्त है। यह प्रेम लौकिक होते हुए भी अलौकिक अर्थ ग्रहण करता
साहित्य **में योगदान**

- जायसी ने हिन्दी साहित्य को एक अमर कृति 'पद्मावत' प्रदान की।
- उन्होंने प्रेम को आध्यात्मिक साधना का माध्यम बताया।
- हिन्दू-मुस्लिम सांस्कृतिक समन्वय को प्रोत्साहित किया।
- अवधी भाषा को साहित्यिक गरिमा प्रदान की।

उपसंहार

मलिक मोहम्मद जायसी हिन्दी साहित्य के उन महान कवियों में हैं जिन्होंने प्रेम और आध्यात्मिकता का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत किया। उनका जीवन साधना और काव्य-रचना का उदाहरण है। 'पद्मावत' जैसी अमर कृति ने उन्हें अमर बना दिया है।

उन्होंने यह सिद्ध किया कि सच्चा प्रेम ही ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग है। उनका साहित्य आज भी मानवता, प्रेम और सहिष्णुता का संदेश देता है।

इस प्रकार जायसी हिन्दी साहित्य के भक्तिकालीन सूफी काव्यधारा के शिखर कवि हैं और उनका साहित्य सदैव प्रेरणास्रोत बना रहेगा।